JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

अस्तित्वाद– जीवन के अस्तित्व के समर्थक एवं विरोधी विचारों का विश्लेषण

[1]वरूण कुमार कुषवाहा, [2]करूणा कुषवाहा
[1]सहायक प्राध्यापक, [2]षोधार्थी
शासकीय नवीन कन्या महाविद्यालय, बैकुंठपुर, कोरिया, छत्तीसगढ

सारांश
अस्तित्ववाद ऐसे विचारों का समर्थन करता है जो मानव एवं अन्य जीवों के अस्तित्व को बनाये रखने में सहयोगी हो। पर्यावरण संरक्षण के अंतर्गत जल संरक्षण, वन संरक्षण, प्रदुषण उन्मूलन के विचारों का अस्तित्ववाद समर्थक है। उसी प्रकार राजनीतिक विचारधाराओं में लोकतान्त्रिक विचारधारा जीवन के अस्तित्व को बचाएं रखने हेतु उचित है। इसके साथ ही शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य से सम्बधित विचार, रचनात्मक एवं सकारात्मक विचार, अध्यात्म में मानसिक शांति का विचार, मानवतावादी विचार, शांतिपूर्ण सहस्तित्व का विचार एवं अस्त्र शस्त्रों के सुरक्षात्मक उपयोग सबंधित विचार भी अस्तित्वादी विचार है। अस्तित्ववाद ऐसे सभी विचारों का विरोधी है जो जीवन के अस्तित्व के लिए हानिकारक है। अतिमानवतावादी, कट्टरवादी, रूढ़िवादी विचार, विध्वंशात्मक विचार, स्वयं को श्रेष्ठता का विचार, विलासिता पूर्ण जीवन का विचार अस्तित्व विरोधी विचार है। अस्तित्ववाद सुव्यवस्थित तरीके से अध्ययन से प्राप्त प्रमाणिक विचारों का समर्थक है।

कीवर्ड – अस्तित्ववाद, पर्यावरण संरक्षण, लोकतान्त्रिक विचार, शांतिपूर्ण सहस्तित्व, सामूहिक अस्तित्व।

प्रस्तावना
हालाकि अस्तित्ववाद का विचार पश्चिमी जगत की देन समझा जाता है किकगार्ड ने 1843 ई. में इस वाद को प्रस्तुत किया था। परन्तु अस्तित्ववादी विचार बहुत पहले से हमारे प्राचीन साहित्यों में रहा है। हमारे कई प्राचीन साहित्यों में भी जो विचार दिए गए है वह जीवन के अस्तित्व के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है अर्थात अस्तित्ववादी विचार है। जैसे प्राचीन साहित्यों में प्रकृति का चित्रण हमें प्रकृति से जुड़ने को प्रेरित करने के लिए किया गया है जो हमारे अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण है। प्राचीन अध्यात्मिक साहित्यों में भी मानसिक शांति एवं स्वास्थ्य के लिए विचार दिए गए है। योग एवं प्राणायाम के विचार हमारे अस्तित्व से जुड़ा हुआ है।
इस धरती पर जीवन के अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण विचारों से बने एक विचारधारा को ही अस्तित्ववाद कहते हैं। अस्तित्ववाद में किसी विषय पर चिंतन इस बात को ध्यान में रखते हुए किया जाता है कि वह जीवन के अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण है या नहीं। हर क्षण हर कार्य में जीवन के अस्तित्व के अनुसार उपयोगिता एवं महत्ता को ध्यान में रखते हुए ही कार्य किया जाता है या चिंतन किया जाता है।
शांतिपूर्ण सह अस्तित्व का विचार भी ध्यान देने योग्य है। यह विचार मिल जुल कर रहने पर जोर देता है। मिल जुलकर एक समूह में रहने के कारण ही हमारा अस्तित्व बचा रहा है। इसी कारण इस हिंसक जानवरों के सामने भी अपना अस्तित्व बचा पाए हैं बल्कि अपना अस्तित्व बेहतर कर पाए हैं।
कुछ विचार हर परिस्थितियों में लागु होते हैं, परन्तु ज्यादातर विचार एक विशेष समय, स्थान एवं परिस्थिति में सही होते है जबकि अन्य परिस्थितियों में उन्हें लागु नहीं किया जा सकता है अर्थात उन परिस्थितियों में वह विचार मानव अस्तित्व के लिए हानिकारक हो सकते है।
अरूण स्वामी (2022) के अनुसार साहित्य में अस्तित्ववाद की अवधारणा मानवीय यथार्थ एवं परिस्थितियों के विश्लेषण से प्रारम्भ होती है। अज्ञेय ने अपने साहित्य में मानव जीवन की मूल आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए चिंतन किया है। यादवराव बाबूराव धूमाल एवं चंदा डी सोनकार के अनुसार अस्तित्ववाद का प्रमुख उद्देश्य मानव को उसके अस्तित्व के प्रश्नों से परिचित कराकर उसको अलगाव से दूर करना है। अज्ञेय जी ने अपने उपन्यासों में अस्तित्व से जुड़े प्रश्नों को उठाया है। मानव अस्तित्व से जुड़ी समस्याओं पर चिंतन महत्वपूर्ण है। उनके बाद भी कई साहित्यकारों ने इस पर कार्य किया है। डॉ. गीता यादव के अनुसार मोहन राकेश जी के साहित्यों में अस्तित्ववाद का व्यापक प्रभाव दिखाई पढ़ता है। उन्होंने विभिन्न सामाजिक आर्थिक वर्ग के लोगो के अस्तित्व की लड़ाई के विभिन्न रूपों को अपनी रचनाओं में चित्रित किया है।

अस्तित्ववाद के अनुसार व्यक्तिगत स्वार्थ या व्यक्तिगत अस्तित्व की बजाय सामूहिक अस्तित्व महत्वपूर्ण है। ऐसे विचार जो जीवन ऐसे विचार जो जीवन के अस्तित्व के पक्ष में नहीं है, उन्हें समाप्त कर देना चाहिए अर्थात ऐसे विचारों का अनुसरण नहीं करना चाहिए। और अस्तित्वाद की इन विचारों का अनुसरण करते हुए नए साहित्यों का सृजन करना चाहिए।

अस्तित्ववाद एवं पर्यावरण संरक्षण

अस्तित्ववाद पर्यावरण संरक्षण के विचार का समर्थन करता है। स्वच्छ पर्यावरण मानव के अच्छे स्वास्थ्य के लिए अत्यंत आवश्यक है। यदि पर्यावरण प्रदुषित होगा, हवा विषैली होगी तो हमारे सांस के साथ शरीर में पहुंच कर हमारे स्वास्थ्य को खराब करेगी अर्थात मानव के अस्तित्व पर संकट आ जायेगा। इसीलिए स्वच्छ पर्यावरण मानव एवं समस्त जीव जन्तुओं के लिए अस्तित्व को बचाएं रखने के लिए अनिवार्य है। अतः यह स्पष्ट है कि अस्तित्ववाद पर्यावरण संरक्षण के सभी विचारों का समर्थक है एवं पर्यावरण को हानि पहुचने वाले, प्रदुषण फैलाने वाले, जंगलों को काटने वाले सभी विचारों एवं कृत्यों का विरोधी है।

भारतीय साहित्यों में भी बहुत सारे कविताओं एवं लेखों के माध्यम से प्रकृति का चित्रण किया गया है। जो हमें प्रकृति से जुड़ने को प्रेरित करता है एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति चेतना जागृत करता है। ऐसा वर्णनों से स्पष्ट है कि साहित्यकारों ने प्रकृति के महत्व को समझा था।

हमारे अस्तित्व के लिए वर्षा जल संरक्षण सबसे महत्वपूर्ण है। क्योंकि हमें पीने के लिए स्वच्छ जल चाहिए जिसके बिना हम एक दिन भी नहीं रह सकते। कृषि के लिए भी जल चाहिए। कृषि से ही हमें भोजन मिलता है जिसके बिना हमारा जीवन ही संभव नही है। इसीलिए वर्षा जल उचित प्रबंधन अत्यंत आवश्यक है। प्राचीन काल से ही हमने तालाबों एवं बांधों के माध्यम से वर्षा जल संरक्षण का प्रयास किया है जिससे हमें पानी अन्य मौसम में भी उपलब्ध हो पाता है। और यह भूमिगत जल स्तर को भी बढ़ाता है। जिससे हमें कुओं में भी पानी उपलब्ध हो पाता है। वर्षा जल संरक्षण के उपायों से हम कम बारिश होने पर भी सिचाई के लिए पर्याप्त पानी की व्यवस्था कर सकते हैं। विज्ञान ने वर्षा जल संरक्षण की पर्याप्त तकनिकी का विकास कर लिया है।

वर्षा का शौन्दर्यात्मक विवरण हमारे साहित्यों में बहुत मिलता है। किसानों के लिए वर्षा के महत्व का वर्णन भी किया गया है। साहित्यों में इसके उल्लेखों से स्पष्ट है कि प्राचीन काल से ही वर्षा जल के महत्व को समझाा गया है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि वर्षा जल संरक्षण हमारे अस्तिव के लिए महत्वपूर्ण विषय है। वर्षा जल के प्रबंधन से ही पीने के पानी एवं कृषि सिचाई हेतु पानी की उपलब्धता सुनिश्चित की जा सकती है अर्थात हमारे अस्तित्व की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सकती है।

अस्तित्ववाद एवं राजानीतिक चिंतन

राजनीतिक विचारधाराओं में अस्तित्ववाद लोकतांत्रिक विचारों का समर्थक है। ऐसे विचार जो समस्त जनता के हित में हो अर्थात समस्त मानव के अस्तित्व के संरक्षक हो। लोकतंत्र मे जनता के द्वारा चुने हुए नेता होते है जो जनता के बीच में से ही होते है। उन पर एक जिम्मेदारी होती है कि जनता के हित में कार्य करें। नेता अगर स्वार्थी हो तो भी उसे डर रहता है कि यदि जनता के हित में कार्य नहीं किया तो जनता अगले चुनाव में अपना मत नहीं देगी। यह डर महत्वपूर्ण है। यही डर उन्हें अनियंत्रित होने से रोकता है। लोकतंत्र में नेता को बदला भी जा सकता है। यह भी जनता की महत्वपूर्ण शक्ति है जो मानव अस्तित्व के लिए बेहतर है। लोकतंत्र किसी नेता के पास अनियंत्रित शक्ति आने से रोकता है अर्थात नेता को राजनेता बनने के बजाय लोकनेता बनने को मजबूर या प्रेरित करता है।

राजतन्त्र में राजा के सोच पर सब निर्भर करता है। राजा यदि जनता के दुख दर्द के प्रति संवेदनशील हुआ तो जनता के हित के कार्य होने की संभावना बढ़ जाती है और यदि नहीं हुआ तो जनता भगवान भरोसे जीने को मजबूर हो जाती है। राजतन्त्र में जनता के हित में बहुत कम कार्य होने की संभावना होती है।

अस्तित्ववाद एवं सुरक्षात्मक उपयोग हेतु अस्त्र शस्त्र

अस्तित्ववाद अपने सुरक्षा हेतु अस्त्र शस्त्र रखने का समर्थक है। अस्त्र शस्त्रों का उपयोग भी देश में लोकतान्त्रिक एवं मानवतावादी मूल्यों की स्थापना एवं उनकी रक्षा करने के लिए आवश्यक है। वैश्विक शांति के लिए भी यह आवश्यक है मानव मे स्वार्थ नाम का बहुत बड़ा अवगुण होता है जिसके कारण कभी भी कोई व्यक्ति या कोई देश स्वार्थ की भावना को नियंत्रित करने के लिए अस्त्र शस्त्र का डर पैदा करना जरूरी है। एक शक्तिशाली देश जिसके पास आधुनिक अस्त्र शस्त्रों एवं प्रशिक्षित सैनिकों की एक सेना है तो कोई भी पड़ोसी देश उससे लड़ने की हिम्मत नही कर पाता है। उदण्ड लड़ाकू देश भी शांति से रहने को महबूर हो जाता है। दुश्मन देशों की शाजिसों का प्रत्युत्तर देने एवं अपनी सीमाओं को सुरक्षित रखने के लिए भी अस्त्र शस्त्र आवश्यक है। हालाकि इनका गलत उपयोग भी संभव है परन्तु या हमारी सोच पर निर्भर करता है।

अस्तित्ववाद– रूढ़िवादी विचारों का विरोधी

अस्तित्ववाद रूढ़िवादी एवं कट्टर विचारों का विरोधी है। वह विचार जो समाज को कमजोर करता हो, जो जीवन की प्रगति में बाधक हो, जो हमारे अस्तित्व के लिए हानिकारक हो, ऐसे रूढ़िवादी विचारों का अस्तित्ववाद समर्थन नहीं करता है। समाज में ऐसे रूढ़िवादी विचार नासमझी के कारण पनपते हैं। जिन्हें हम लम्बे समय में गलती से परंपरा मानने लगते हैं। वास्तव में रूढ़िवादी विचारों का कोई तथ्यात्मक आधार नहीं होता है। कोई तार्किक व्याख्या नहीं होती है। कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं होता है। संत कवि कबीरदास जी ने समाज में व्यास कई रूढ़िवादी विचारधाराओं का खंडन किया है।

"जाति न पूछो साधू की, पूछ लीजिये ज्ञान।
मोल करों तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान।"

इस दोहे में जातिवाद की आलोचना की गई है। किसी सज्जन व्यक्ति की जाति महत्वपूर्ण नहीं है बल्कि उसका ज्ञान महत्वपूर्ण है। किसी व्यक्ति के बारे में कुछ जानना ही है तो उसके ज्ञान को जानना चाहिए। उन्होंने जातिवाद जैसी रूढ़िवादी विचारधाराओं का खंडन किया है।

अस्तित्ववाद एवं प्रकृतिवाद

प्रकृति के नियमों को ध्यान में रखकर ही हमें जीवन चाहिए। प्रकृति में समस्त जीवों के बीच अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष होता है। जो अपने आप को परिस्थितियों के अनुसार सबसे बेहतर तरीके से ढाल पाता है, वही अपने अस्तित्व को बनाये रख पाता है। जीवन का बेहतर रूप का अस्तित्व बढ़ता है और जो समय के साथ संघर्ष में हार जाते हैं उनका अस्तित्व समाप्त हो जाता है।

अस्तित्ववाद– रचनात्मक एवं संकारात्मक विचारों का समर्थक

रचनात्मक विचार ही हमारे अस्तित्व के लिए सही है। रचनात्मक मष्तिस्क से हम विषम परिस्थितियों में जीवित रहने का तरीका खोज सकते है। हम कुछ नयी रचना करने की सोचते हैं। कुछ ऐसी रचना करते हैं जिससे हमारा अस्तित्व और बेहतर होता है। हमें और मजबूत बनाता है। हालाकि मनुष्यों ने कुछ ऐसी रचना भी की है जो विध्वंसकारी है जो हमारे अस्तित्व के लिए हानिकारक है। अत्यंत विनाशकारी नाभिकीय हथियारों का अविष्कार इसमें से एक है।

अस्तित्ववाद– विलासितापूर्ण जीवन का विरोधी

व्यक्ति अक्सर ज्यादा धन कमाना चाहता है और उनसे वह विलासिता पूर्ण जीवन की चीजें खरीदता है। ये विलासितापूर्ण चीजे शरीर को कमजोर बनाती है। ऐसा जीवन जिसमें शारीरिक मेहनत अत्यंत कम हो, गर्मी और ठण्ड का सामना न करना पढ़े, प्रकृति से दूर हो, कृतिम चीजों के बीच रहना पढ़े, हमारे अस्तित्व को कमजोर करता है।

अस्तित्ववाद–स्वास्थ्य प्रबंधन के विचारों का समर्थक

शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य प्रबंधन हमारे अस्तित्व के के लिए अत्यंत आवश्यक है। जो व्यक्ति अपने स्वास्थ्य को बनाये रख पाता है वही अपने अस्तित्व को बचा सकता है। उचित मात्रा एवं पौष्टिकता से भरपूर भोजन लेना जरूरी है। स्वच्छ जल पर्याप्त मात्रा में पीना आवश्यक है। शारीरिक मेहनत करना भी उतना ही आवश्यक है अन्यथा हमारे शरीर में चर्बी जमा होने लगता है और मोटापा आने लगता है जो हमारे अस्तित्व को कमजोर बनाता है। कई बिमारियों का कारण बनता है।

अच्छें मानसिक स्वास्थ्य के लिए तनाव रहित जीवन जीना जरूरी है। मानसिक शांति आवश्यक है मानसिक शांति के उपाय हमारे आध्यात्मिक साहित्यों में मिलता है। मानसिक शांति भी हमारे अस्तित्व के लिए आवश्यक है अंधाधुध विनाशकारी प्रगति के होड़ में कई बार इतने व्यस्त हो जाते हैं कि अपने स्वास्थ्य का ध्यान नही रख पाते हैं। धन कमाना ही सर्वोपरी लगने लगता है। योग एवं प्राणायाम का विचार हमारे आध्यात्मिक साहित्यों मे दिया गया है। जो हमारे शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को ठीक रखने के लिए दिए गए हैं।

कई बार हम धन कमाने के लिए प्रकृति को भी नुकसान पहुचा देते हैं। इस बात का ध्यान नही रखते कि प्रकृति को नुकसान पहुचानें का अर्थ है अपने अस्तित्व को संकट में डालना।

अस्तित्ववाद एवं पर्यटन

पर्यटन जीवन के अस्तित्व के लिए अच्छा है। पर्यटन से हम एक दुसरे के क्षेत्रों, उनके परम्पराओं, संस्कृति, रहन सहन के बारे में परिचित होते हैं जो सामाजिक सदभावना, वसुधैव कुटुम्बकम की भावना को सशक्त करते हैं।

अस्तित्ववाद एवं विज्ञान एवं तकनीकि का सकारात्मक उपयोग

विज्ञान एवं तकनीकि का सकारात्मक उपयोग पर्यावरण एवं जीवन के अस्तित्व को ध्यान में रखकर ही किया जाना उचित है। कृषि मानव जीवन के अस्तित्व से जुड़ा सबसे महत्वपूर्ण मुद्या है। कृषि में अत्याधुनिक तकनिकी का उपयोग सोच समझकर ही करना चाहिए। वर्तमान में कुछ ऐसी चीजे भी कृषि में पैदावार बढ़ाने और ज्यादा लाभ कमाने के लिए की जा रही है जो मानव स्वास्थ्य के लिए सही नहीं है। इसमें कीटनाशकों का अत्याधिक उपयोग सबसे महत्वपूर्ण है, जिसके कारण कैंसर जैसी खतरनाक बीमारियां उत्पन्न हो रही हैं। डिब्बे में बंद खाद्य पदार्थों में कई खाद्य संरक्षक केमिकल का उपयोग भी मानव स्वास्थ्य के लिए अत्यंत हानिकारक है। पोलीथिन का उपयोग भी जीवन के लिए हानिकारक है। आज पृथ्वी के हर कोने तक प्लास्टिक के छोटे–छोटे कण पहुच चुके हैं।

अस्तित्ववाद एवं सांस्कृतिक त्योहारों एवं उत्सवों का महत्व

सांस्कृतिक त्योहार एवं उत्सव हमारे मन को खुशियों से भर देते है। इनसे मानसिक शांति मिलती है। हमारे अन्दर उत्साह एवं उमंगों का संचार होता है। जो हमारे मानसिक स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है। जीवन के अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण होने के कारण यह अस्तित्ववाद में महत्वपूर्ण है। जीवन के अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण होने के कारण यह

अस्तित्ववाद में महत्वपूर्ण है। छत्तीसगढ़ की संस्कृति की एक धारा लोक जीवन से प्रवाहित है। धारा जीवन के उल्लास एवं उमंग से भरा है ओर अनेक रूपों में प्रकट है। इसके अंतर्गत अंचल के प्रसिद्ध उत्सव, नृत्यसंगीत, मेलामड़ई तथा लोक शिल्प शामिल है। बस्तर का दशहरा, रायगढ़ का गणेशोत्सव, बिलासपुर का राउत मढ़ई पंडवानी, भरथरी, पंथी नृत्य, करमा, दादरा, गेड़ी नृत्य, गौरा, धनकुल आदि हमारे जीवन में लय एवं उत्साह भरते हैं जो हमारे अस्तित्व को लम्बे समय तक बनाये रखे हैं। आध्यात्मिकता हमारे जीवन में शांति लाती है– जलप्रपात की कल कल व्याकुल हृदय को शांति और आध्यात्मिक अनुभूति प्रदान करती है।

निष्कर्ष

इस धरती पर जीवन सबसे महत्वपूर्ण है। जीवन का अस्तित्व किसी भी अन्य चीज की तुलना में ज्यादा महत्वपूर्ण है। इसलिए वे सभी विचार जो मानव अस्तित्व के समर्थक हैं उनका अनुसरण करना चाहिए और जो विचार जीवन के अस्तित्व के समर्थक हैं अर्थात हानिकारक हैं उन्हें किसी भी कीमत पर अनुसरण नहीं करना चाहिए। अस्तित्व विरोधी विचारों को समाप्त कर दिया जाना चाहिएं हमें इस धरती पर जीवन के अस्तित्व को ध्यान में रखते हुए ही किसी विषय पर विचार करना चाहिए। कोई कार्य करते समय या कोई निर्णय लेते समय भी जीवन के सार्थकता का ध्यान रखना चाहिए।

अस्तित्ववाद के अनुसार व्यक्तिगत स्वार्थ या व्यक्गित अस्तित्व की बजाय सामूहिक अस्तित्व महत्वपूर्ण है।

संदर्भ

1. डॉ. पारसनाथ तिवारी– कबीर ग्रन्थावली, पृष्ठ कंमाक– 235
2. अरूण स्वामी (2022) – हिंदी काव्य में अस्तित्ववाद का प्रभाव अज्ञेय एवं के सन्दर्भ में,
3. यादवराव बाबूराव धूमल एवं चंदा डी सोनकर (1999) – अस्तित्ववाद से हिंदी उपन्यास – एक मूल्यांकन (अजय की डायरी, अपने अपने अजनबी, लाल टिन की छत के विशेष सन्दर्भ में)
4. डॉ. गीता यादव (2015) – अस्तित्ववाद एवं मोहन राकेश का साहित्य